भूमिका

साहित्य में तुलनात्मक अध्ययन आधुनिक काल की आवश्यकता है इसके माध्यम से लेखकों के विचारों का आदान प्रदान होता है | जिससे सांस्कृतिक ,साहित्यिक एवं भावात्मक एकता को बढ़ावा मिलता है | इस शोधकार्य के अंतर्गत दो भिन्न भाषाओं में रचित उपन्यासों का आंचलिक संदर्भों में तुलनात्मक अध्ययन हुआ है | हिंदी अपने में एक व्यापक भाषा और उसका साहित्य अपने में बेहद समृद्ध है परन्तु नेपाली भाषा भी कमतर अवस्था में नहीं है | लील बहादुर कृत 'ब्रह्मपुत्र का छेउछाउ' को साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला है | हिंदी और नेपाली दो भाषाओँ में रचित उपन्यास ब्रह्मपुत्र नदी के आस पास के क्षेत्र को केंद्र में रखकर लिखा गया है | दोनों उपन्यास आंचलिक उपन्यास की श्रेणी में आते हैं |

आंचलिक रचना उन विशेष प्रवृतियों से संबंधित रचना का द्योतक है जो किसी भूभाग की संस्कृति को उसकी समग्रता में अभिव्यक्त करता है | आंचलिकता शब्द अंचल से बना है | किसी अंचल या क्षेत्र की विशिष्टताओं का समाहार जिन रचनाओं में हो वही आंचलिक रचना हैं | आंचलिकता की प्रवृत्ति ने विश्व साहित्य को प्रभावित किया है। हिंदी साहित्य भी इससे अछूता नहीं है। देश की प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक विविधता के तहत भारतीय साहित्य में उसका स्वागत एवं प्रसार विविधोन्मुखी रूप में हुआ है। आंचलिक रचनाओं में वहां की भाषा, लोकोक्ति, लोक कथाएं, लोक गीत, मुहावरें,लहजा, वेश–भूषा , धर्म–जीवन, समाज–संस्कृति तथा आर्थिक और राजनीतिक जागरण के प्रश्न एक साथ अभिव्यक्त होते हैं | आंचलिक उपन्यास में माटी की गंध के चित्रण को श्रेय मिला है। यह मुख्यत: ग्रामीण जीवन से सम्बंधित रहा है | अंचल की लोक संस्कृति, जनजीवन, भाषा, रहन-सहन तथा उन्मुक्त परिवेश का चित्रण आंचलिक उपन्यासों में होता रहा है। आंचलिक उपन्यास का यथार्थवादी होना बेहद जरूरी है ताकि अंचल की वास्तविकता का चित्रांकन हो सकें। इसमें लेखक का अंचल के यथार्थ की जटिलता के साथ उसकी समग्रता पर ध्यान अधिक रहता है। ग्रामीण तथा पिछड़े इलाकों का चित्रण आंचलिक उपन्यासों के माध्यम से सघनता में होता है। राष्ट्र जीवन में राष्ट्रीय भावना के विकास तथा जन जागृति तथा नवचेतना को

व्यापक आयाम देने के लिए लेखकों का ध्यान गाँवों की ओर गया। गाँवों का देश भारत को उसकी समग्रता में चित्रित करने के लिए आंचलिक जीवन को सामने लाना आवश्यक है। अत: ग्राम्य जीवन के प्रति लेखकों का आग्रह बढ़ा है।साहित्यकार आंचलिक समाज एवं परिवेश से प्रभावित होकर साहित्य के माध्यम से अपनी रचनाधर्मिता को प्रश्रय देता है। आंचलिक कथाओं ने अल्प समय में साहित्य जगत में अपना स्थान बनाया है। उपन्यासों ने कथा-साहित्य के अंतर्गत अंचलों में बिखरी हुई संस्कृति को क्रमबद्ध तरीके से अपनी रचनाओं में साकार किया है। आंचलिक रचनाओं में किसी ग्राम, प्रान्त एवं भूखंड की समग्र विशेषताओं को उकेरा जाता है।हिंदी, नेपाली, और बंगला आदि आधुनिक भारतीय भाषाओँ में उपन्यास के नाम से चिन्हित यह नवीनतम विधा है | मानव जीवन के साथ-साथ चलने की प्रवृत्ति इस विधा में होने से कोमल गुणवत्ता तथा इसमे सदा नई नई प्रवृत्तियां एवं शैलीगत विशेषता आती गयी है| आंचलिक उपन्यास ने यूरोप, अमेरिका होते हुए विश्व के सभी उपन्यास लेखन को प्रभावशाली बनाया है | सबसे पहले बंगला कथा साहित्य के माध्यम से प्रसारित आंचलिकता धीरे-धीरे अन्य भारतीय आधुनिक भाषा साहित्य कृतियों में भी आंचलिक रचनाएँ होने लगी |

ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ उपन्यास की शुरुआत असम प्रान्त के दिशांगमुख में निहित एक गाँव से होता है | लेखक ने इस उपन्यास में पात्रों के कार्य –व्यापारों और घटना क्रम की योजनाओं द्वारा ब्रह्मपुत्र के आस पास निवास करने वाले नेपाली समाज ,उनके जीवन के घात –प्रतिघातों का सुंदर ,मार्मिक चित्रण किया है | दिशांगमुख की इस गाँव में पांच बस्तियां समाहित है | बलमा, जेलगाँव, अलिसिगा की मीरा बस्ती, अलीसीगा के मुसलमान बस्ती और चितिलिया है | व्यक्ति को स्वस्थ रहने के लिए सुख एवं शांति का होना आवश्यक है | जहाँ यह सब अनुभूति का स्वाद नहीं होता वहाँ व्यक्ति का रह पाना अत्यंत कठिन हो जाता है | मानवीर कार्की भी अपने पिता के वासस्थान नेपाल से अपने को अलग कर लेते हैं क्योंकि वे ग़रीबी, सामंतवादी शोषण दुःख आदि कष्टों को सहन करने की क्षमता अपने में और नहीं खोज पाते हैं | इससे बेहतर ज़िन्दगी की तलाश में अपनी पत्नी एवं दूध पीते बच्चे गुमाने को लेकर एक नये आसरे की तालश में निकल पड़ते हैं | तलाश के इस क्रम में वे असम प्रान्त के डायरी महाजन के यहाँ जीवन के नये

पहलुओं को सुलझाने की आशाएं लिए पहुँचते हैं | जिस डायरी महाजन के आसरे में उन्हें शरण मिला था वह एक शोषक समाज का प्रतिनिधित्व करता है | जीवन का नया अध्य्याय वहां खुलता है | अपने श्रम को बेचता मानवीर जीवन के अनेकों ख्वाब सजाता आगे बढ़ता है पर उसका कोई खवाब हकीकत बने उसे पूर्व काल उसे ग्रस लेता है | उपन्यास का नायक इसी मानवीर का बेटा गुमाने है | अनाथ गुमाने जीवन के अनेक छल –निश्छल स्थिति से रूबरू होता ,उनसे जूझता आगे बढ़ता है | उपन्यास में सभी घटना ,कथा ,पात्र गुमाने के इर्द गिर्द उसके और उस अंचल के चरित्र गढ़ने में विस्तार पाता है | गुमाने के माध्यम से रचनाकार ने अंचल की सत् –असत् वृतियों को खोलकर रख दिया है | इस उपन्यास के माध्यम से क्षेत्री जी ने प्रवासी नेपाली जीवन की दुःख व्यथा ,उनके जीवन संघर्ष का भली भांति परिचय दिया है | पलायन की पीड़ा से स्वयं गुज़रे क्षेत्री जी ने नेपाली जीवन और उनके संघर्षों की कथा को बहुत ही मार्मिक प्रस्तुती दी है | ब्रह्मपुत्र अंचल में प्रयुक्त भाषा और उसके शब्दों के माध्यम से यह उपन्यास अपने अंचल की कथा को व्यक्त करने में सफल हुआ है |

देवेन्द्र सत्यार्थी कृत हिंदी के ब्रह्मपुत्र में भी ब्रह्मपुत्र नदी के आस पास बसने वाली बस्तियों का चित्रण हुआ है जहाँ असमिया ,नेपाली ,मुसलमान और मीरी जनजातियाँ निवास करती थीं | उनके मध्य जातिगत आपसी मतभेद तो हैं परन्तु उनके साथ ही मैत्री भाव के अनेक रूप भी सामने उभर कर आये हैं |

प्रस्तुत शोध प्रबंध का पहला अध्याय है **शोध परिचय** | जिसमे शोध की प्रयोजनीयता के आधार पर शोध-कार्य से सम्बंधित मुख्य बिन्दुओं पर विचार किया गया है | जिसे निम्नलिखित उपशीर्षककों में विभक्त किया गया है :- 1.1 शोध शीर्षक, 1.2 शोध का परिचय, 1.3 शोध की समस्या, 1.4 शोध का उद्देश्य, 1.5 पूर्व शोध कार्यों की समीक्षा, 1.6 विभिन्न पुस्तकों और पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित लेख , 1.7 शोध प्रविधि, 1.8 शोध का औचित्य, 1.9 शोध की सीमा |

दूसरा अध्याय- आंचलिकता की अवधारण एवं स्वरुप है | प्रस्तुत अध्याय में सुविधा की दृष्टि से तीन उपअध्यायों में विभक्त किया है 1. आंचलिकता :पृष्ठभूमि एवं विविध सन्दर्भ 2. हिंदी आंचलिक

उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय 3. नेपाली आंचलिक उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय है |इसके अंतर्गत आंचलिकता की अवधारणा और हिंदी और नेपाली आंचलिक उपन्यासों का संक्षित विवरण दिया है |

तृतीय अध्याय -देवेन्द्र सत्यार्थी एवं लील बहादुर क्षेत्री समय समाज एवं रचना धर्मिता है | इस अध्याय को दो भागों में विभक्त किया है – 1. देवेन्द्र सत्यार्थी समय, समाज एवं रचना धर्मिता 2. लील बहादुर क्षेत्री समय,समाज एवं रचना धर्मिता | देवेन्द्र सत्यार्थी समय, समाज एवं रचना धर्मिता - देवेन्द्र सत्यार्थी का जन्म 28 मई 1908 में पटियाला के भदौड़ गाँव में हुआ था। सत्यार्थी का व्यक्तित्व अपने आप में बहुत प्रभावशाली है। हिंदी के यायावर साहित्यकार देवेन्द्र सत्यार्थी जितने बड़े लोक साधक हैं उतने ही बड़े और ऊंचे कथाकार हैं। पुरे बीस साल तक उन्होंने लोकगीतों की तलाश में गाँव-गाँव भटककर हिंदुस्तान के कथा साहित्य का निरीक्षण- परीक्षण किया था। सत्यार्थी के कथा साहित्य में जीवन घुमक्कड़ी के इतने, कठोर और दुस्साहसी अनुभव है कि मन उसी के साथ बहता चला जाता हैं।

2. लील बहादुर क्षेत्री समय, समाज एवं रचना धर्मिता - लीलबहादुर छेत्री का जन्म 1923 में पूर्वोत्तर भारत के गुवाहाटी में हुआ था। लीलबहादुर छेत्री कृत 'ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ' नेपाली साहित्य की आधुनिक काल की द्वितीय चरण की रचनाकृति है। इसकी समयावधि लगभग पच्चीस तीस साल का है | इसे बाईस खण्डों में विभक्त किया गया है। इसमें असमिया लोगों के यथार्थ जीवन का चित्रण है। उपन्यास की औपन्यासिक तत्वों के साथ ऐतिहासिक तत्वों को भी उजागर किया गया है। कृति में चारित्रिक दृष्टि से वर्ग प्रधान और व्यक्ति प्रधान दोनों तरह के पात्र हैं।

चतुर्थ अध्याय – ब्रह्मपुत्र एवं ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ उपन्यासों में अभिव्यक्त आंचलिक जीवन का तुलनात्मक अध्ययन | इस अध्याय को पांच उपअध्यायों में विभक्त किया है | 1. आंचलिक जीवन में बदलता सामाजिक परिवेश 2. आंचलिक राजनीति और राजनीति का आंचलिक जीवन हस्तक्षेप 3.आंचलिक जीवन की सांस्कृतिक जीवन्तता 4. मूलभूत सुविधाओं हेतु जूझते अंचल 5. हिंदी के ब्रह्मपुत्र एवं नेपाली के ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ में अभिव्यक्त आंचलिक जीवन का तुलनात्मक अध्ययन |

हिंदी के ब्रह्मपुत्र एवं नेपाली के ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ अभिव्यक्त आंचलिक जीवन का तुलनात्मक अध्ययन इस अध्याय को मैंने पांच उपशीर्षकों में बांटा है | जिसमें मैंने आंचलिक जीवन में बदलता सामाजिक परिवेश,आंचलिक राजनीति और राजनीति का आंचलिक जीवन में हसक्षेप,आंचलिक जीवन की सांस्कृतिक जीवन्तता ,मूलभूत सुविधाओं हेतु जूझता अंचल और हिंदी के ब्रह्मपुत्र और नेपाली के ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ उपन्यासों में अभिव्यक्त आंचलिक जीवन का तुलनात्मक अध्ययन है | इन अध्यायों में दोनों आलोच्य कृति की सामाजिक ,राजनैतिक ,सांस्कृतिक और आर्थिक स्थिति का मूल्यांकन हुआ है तत्पश्चात दोनों उपन्यासों की सामाजिक ,राजनैतिक ,सांस्कृतिक और आर्थिक स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है |

पंचम अध्याय -ब्रह्मपुत्र एवं ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ उपन्यासों का शिल्पगत वैशिष्ट्य का तुलनात्मक अध्ययन इस अध्याय चार उपशीर्षकों में विभाजित किया गया है | भाषागत वैशिष्ट्य,शैलीगत वैशिष्ट्य ,लोकोक्ति एवं मुहावरें और ब्रह्मपुत्र एवं ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ उपन्यासों के शिप्गत वैशिष्ट्य का तुलनात्मक अध्ययन है | दोनों उपन्यासअपने कथ्य की प्रस्तुती में किस भाषा और शिल्प का प्रयोग करते हैं ,दोनों उपन्यास अंचल विशेष की जीवन की अभिव्यक्ति में आंचलिक बोली और भाषा से कितना प्रभाव ग्रहण करते हैं | इसका विश्लेषण किया गया है | दोनों कृतियों में भाषा की संप्रेषणीयता कहाँ तक सफल होती है इसकी पड़ताल हुई है |अंत में दोनों कृतियों की भाषा शिल्प का संक्षिप्त तुलनात्मक अध्ययन हुआ है |

इस लघु शोध प्रबंध को पूर्ण करने में मुझे कई लोगों का सहयोग मिला | मैं उनके प्रति आभार प्रकट कर उनके महत्त्व को किंचित भी कम नहीं करना चाहता परन्तु एक औपचारिकता पूर्ति हेतु मैं सर्वप्रथम अपने निर्देशक डॉ चुकी भूटिया का आभार प्रकट करना चाहता हूँ कि जिन्होंने मेरा सदैव मार्गदर्शन किया |

मैं हिंदी विभाग के प्रभारी अध्यक्ष डॉ दिनेश साहू,डॉ प्रदीप त्रिपाठी ,डॉ उपमा शर्मा ,कुलदीप सिंह सभी का आभार प्रकट करना चाहता हूँ जिन्होंने मेरे इस शोध की पूर्णता में अपना सहयोग दिया |

मैं समस्त हिंदी विभाग के सहयोगी साथियों का भी आभार प्रकट करता हूँ कि उन्होंने मेरी सुविधा और असुविधा का सदैव ख्याल रखा और मेरे शोध के लिए हर संभव अपना सहयोग प्रदान किया | मैं अपने परिवार का हृदय की अतल गहराई से उनका शुकराना करना चाहता हूँ ,जिन्होंने मुझे सदैव संबल दिया,निरंतर आगे बढ़ने की प्रेरणा दी और मुझपर हमेशा अपना भरोसा और आशीर्वाद बनाए रखा |

अंत में मैं ईश्वर के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ और उनसे सभी प्राणियों के सुखद और बेहतरीन की प्रार्थना करता हूँ|